P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-I*September-2015

फैड्रिक नीत्शे का राजदर्शन

सारांश

''आज के युग में, अर्थव्यवस्था में, युद्ध में तथा विचारों में संघर्ष संभव है किन्तु जिस दिन संघर्ष नहीं रहेगा, वह दिन अवसाद व विनाश का दिन होगा। संघर्ष समस्त वस्तुओं का मूल है।''

––नीत्शे

दुनिया के लोग अपने–अपने संसार का निर्माण करते हैं तथा उसके अनुरूप अपने मूल्यों तथा मानकों को तय कर लेते हैं। राजदर्शन के महत्वपूर्ण विचारक फैड्रिक नीत्शे का जन्म सन् 1844 में जर्मनी में हुआ। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जन्में जर्मन लेखक एवं दार्शनिक नीत्शे, ग्रीड के बैसल राज्य में 25 वर्ष की आयु में प्रोफेसर नियुक्त हुए।

मुख्य शब्दः फैड्रिक नीत्शे, परम्परागत नैतिकता, सुपरमैन, नैतिकता के सिद्धान्त।

उम्मेद सिंह इन्द्रा
विभागाध्यक्ष,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
जैसलमेर

प्रस्तावना

फैड्रिक नीत्शे ने परम्परागत नैतिकता को चुनौती देते हुए एक नई नैतिकता का आह्वान किया। नीत्शे की नैतिकता शक्ति एवं प्रभुत्व पर आधारित थी। इसी नैतिकता के आधार पर नीत्शे ने 'सुपरमैन' (अतिमानव) की अवधारणा प्रस्तुत की। सुपरमैन से ही सुपर–स्टेट (Super-State) का जन्म हुआ।

नीत्शे मानते हैं कि विकास की प्रक्रिया के फलस्वरूप मानव–समाज दो भागों में बंट गया–

एक तो वे लोग जो 'सुपरमैन' है तथा दूसरे वे लोग जो शारीरिक, नैतिक और बौद्धिक दृष्टि से कमजोर हैं। इतना तो निश्चित है कि शासन की बागडोर शक्तिशाली वर्ग 'सुपरमैन' के हाथ में रहेगीं मनुष्य जीवन में अबौद्धिक तत्व ज्यादा महत्वपूर्ण है, संसार एक ऐसे तत्व के द्वारा नियंत्रित होता है जो बुद्धि से भी अधिक आधारभूत और अचूक है और वह तत्व है– शक्ति प्राप्ति की इच्छा। ''शक्ति...शक्ति...शक्ति और अधिक शक्ति'' वास्तविकता है।

नीत्शे के मतानुसार आधुनिक विश्व बड़े संकट से गुजर रहा है। इस संकट की शुरूआत सुकरात (न्याय के प्रणेता और व्याख्याकार) से हुई। इस चिन्तनधारा को ईसाइयत ने निरन्तर आगे बढाया नीत्शे का मानना है कि इस स्थूल जगत से आगे कोई जगत नहीं। ईश्वर की मृत्यु हो चुकी है। (God is Dead) मनुष्य सुपरमैन की स्थिति में पहुंच चुका है, वह सत्ता का कोई आधार ढूंढ रहा है परन्तु वे उसे पाने के सारे रास्ते एवं संभावनाओं के सभी द्वार बंद कर चुके हैं।

"People create their own worlds and make their own values."

नीत्शे की यह भी स्थापना है कि जनता को आसानी से बेवकूफ बनाया जा सकता है, समुचित प्रचार से तथा उनकी मनोभावनाओं के अनुकूल रूप में उपस्थित करके बड़े से बड़ा झूठ उनके लिए विश्वसनीय सत्य का रूप धारण कर लेता है।

फैड्रिक नीत्शे के मन में रूढ़िगत विचारों और नैतिकता के लिए कोई सम्मान नहीं था, उन्होंने इंसानियत और लोकतंत्र पर प्रहार करते हुए 'हीनता का सिद्धान्त' की संज्ञा दी और कहा कि इनके रचयिता दास मनोवृत्ति के व्यक्ति थे। ईसाईयत शक्तिशाली द्वारा दुर्बल पर विजय का विरोध करती है, यह विकास के मार्ग पर बड़ी बाधा है। लोकतंत्र बुद्धि और समानता में झूठा विश्वास उत्पन्न करता है।

नीत्शे अपनी रचना 'The will to power' में लिखता है कि कमजोरियों पर पर्दा डालने के लिए 'नैतिकता के सिद्धान्त' पढ जाते हैं। धर्म, दया, विश्वास तथा ईश्वर इत्यादि ऐसे गुण हैं जो जानवरों के झुंड (Herd) को शोभा देते हैं। नीत्शे अपनी रचना 'Beyond Good & Evil' में लिखता है इच्छा का सबसे बड़ा रोग 'नैतिकता' नहीं, दया की भावना (Pity) है। यह दास नैतिकता की आधारशिला है। शक्ति की आकांक्षा (will to power) व्यक्तित्व की आन्तरिक शक्ति है। दास–नैतिकता मनुष्य को यह सिखाती हे कि निर्बल का पक्ष लेकर सुख का

अनुभव कैसे प्राप्त किया जा सकता है। सुपर मैन का साथ देने में दास–नैतिकता साथ नहीं देती है।

समाजवाद, मानवतावाद एवं समतावाद आदि परिशोधित रूप में धर्म की ही अभिव्यक्तियां हैं, जो आधुनिक चेतना को भ्रष्ट होने का प्रमाण है। विश्वबंधुत्व की भावना की शरण लेकर मनुष्य के सामने उपस्थित 'उत्तरदायित्व' से पलायन करने के रास्ते ढूंढे जाते हैं। यह दास मनोवृत्ति का उदाहरण है।

नीत्शे ने दास–नैतिकता (Slave-Morality) को चुनौती देते हुए स्वामी–नैतिकता (Master Morality) की अवधारणा को स्वीकारा। वह अधिकाधिक शक्ति अर्जित कर जनसाधारण को अपने नियंत्रण एवं निर्देशन में रखता है। वह आम जनता के प्रति तिरस्कार की भावना रखता है। आम जनता 'भेड़ों का खेड़' है जो सिर झुकाकर चलना मात्र जानती है। दास–नैतिकता संपूर्ण जीवन पर छाने पर मनुष्य का जीवन 'कारावास' का जीवन बन जाता है। स्वामी–नैतिकता ही 'सुपरमैन' का दिशा–निर्देशन कर सकती है।

शक्ति की इच्छा (will to power) मनुष्य की तमाम गतिविधियों का 'गतितंत्र' (Speed-system) है। आधुनिक युग के संकटमोचन के लिए मनुष्य को अपने भीतर 'सुपरमैन–क्वालिटी और एवीलीटी' किवसित करनी होगी।

नीत्शे के मतानुसार 'सुपरमैन' के लिए निमन बातें होनी चाहिए–

1. मानव–प्रकृति से ऊपर उठ चुका हो।
2. भेड़चाल (Herd-Instinct) से मुक्त हो।
3. स्वयं के अनुभव का स्वामी हो।
4. अपनी अलग पहचान बनाने में तत्पर हो।
5. दूसरों से अलग–अलग स्वतंत्र पहचान रखे।
6. वह अपने को विश्वजनीन अधिकारों से अलग रखे।
7. वह अपनी वस्तु–प्रवृत्ति से जन–सामान्य पर कब्जा रखे।
8. उसकी इच्छा ही कानून हो।

नीत्शे राष्ट्रवाद का प्रबल विरोधी था। आधुनिक राज्य बिखरे नहीं, टूटे नहीं, इसे रोकने के लिए राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रवादी चिंतन का रोना रोया जाता रहा है। 20वीं शताब्दी में युद्ध धरती के स्वामित्व के लिए नहीं होंगे वरन् मानव की नियति पर आधारित आधिपत्य स्थापित करने के लिए ''वैचारिक प्रभुत्व की लड़ाई'' (War of and for minds) के लिए होंगे। सुपरमैन को अभिजातीय आदर्श को आत्मसात करना होगा। लोकतंत्र झक बकवास है, बुद्धिवाद का झूठा ढकोसला है, समानता का खोखला आदर्श है, हमें झूठे तथा मिथ्या आडम्बर में अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिए।

धर्म का खण्डन करते हुये नीत्शे की सम्भावना है कि आस्था का ज्वर, अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए प्रयुक्त होता हैं। धर्म भी विकास तथा योग्यता के मार्ग में बड़ी बाधा है। नीत्शे 'नास्तिकवाद' का प्रबल समर्थक है। वह मानव प्रकृति के शांत, सचेतन और तर्कसम्मतता को नकारते हुए मनुष्य के भीतर के अतिमानव (सुपरमैन) को जगाकर विश्व को केवल शक्ति एवं योग्यता पर आधारित व्यवस्था से बांधना चाहता है। यदि अबौद्धिकता को उतना ही नैतिकतापूर्ण ढंग से स्वीकार किया जाना चाहिए जितना कि बौद्धिकता को माना जाता है।

वस्तुतः फैड्रिक नीत्शे प्रति–प्रज्ञावादी (Anti-intellectualism) चिंतक है, जो नास्तिकवाद को अपनाता है। ईश्वर की समाप्ति की घोषणा नीत्शे द्वारा की जा चुकी है। सुपरमैन की अवधारणा आखिरकार ''शक्तिशाली की जीत ही तो है। नीत्शे लोकतंत्र को झक बकवास मानता है, जबकि लोकतंत्र जीवन का आदर्श बन चुका है। तथापि नीत्शे ने साफगोही रूप में स्वीकारा ही 'शक्ति ही सच्चाई' है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वेपर, सी.एल. राजदर्शन का स्वाध्ययन, किताब महल, इलाहाबाद, 1995।
2. हेबुल, ऐन्ड्रेन्व, पोलिटिकल पाल्ग्रेव फाउंडेशन मैक्समिलन, दिल्ली, 2002।
3. वर्मा, के.एन.– राजदर्शन का इतिहास, भाग–1 & 11, रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ, 1998।
4. सूद, जे.पी.– पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास, भाग–1 से 4, के. नाथ एंड कम्पनी, मेरठ, 2007 से 2008।
5. पाण्डेय, जयनारायण प्रमुख राजनीतिक विचारकों की चिन्तनधारा, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2007
6. शर्मा, पी.डी.– अभिनव राजनीतिक चिन्तन, साहित्यगार, जयपुर 2003।
7. सिन्हा, मनोज– समकालीन भारत : एक परिचय, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, दिल्ली, 2012।
8. सिंह उपेन्द्र– पाश्चात्य राजनीतिक विचारक और विचारधाराएं, साहित्यगार, जयपुर, 2007।
9. सेवाइन– हिस्ट्री ऑफ पोलिटिकल थॉट कैम्ब्रिज पब्लिकेशन, लंदन, 1978।
10. फोस्टर– मास्टर ऑफ पोलिटिकल थॉट कैम्ब्रिज पब्लिकेशन, लंदन, 1975।
11. बार्कर, अर्नेस्ट– ग्रीक पोलिटिकल थॉट एक्सफोर्ड पब्लिकेशन्स, 1974।